पंचम अध्याय :

छायावादी काव्य के संदर्भ में निराला का वैशिष्ट्य

पंचम अध्याय :

छायावादी काव्यदृष्टि के सन्दर्भ में निराला का वैशिष्ट्य

पूर्व निरूपित है कि छायावाद काव्य की भाव परक व्याख्या करता है। वस्तु पर कवि के भावों का आरोप, बाह्य पर अन्तः का आवेष्ठन या ` हृदय की अनुकृति वाह्य ` ही छायावादी काव्य का प्राणतत्व है। वस्तु वर्णन में वस्तुनिष्ठता की अपेक्षा कवि की आत्मनिष्ठता छायावाद का प्राण और ` छाया ` शब्द की वास्तविक व्याख्या है।[1] इस प्रकार छायावादी काव्य में भावुकता का प्राधान्य था। निराला जी ने छायावादी काव्य को ` कोरी भावुकता ` से बचाया। यद्यपि उन्होंने काव्य को ` कवि हृदय निर्गत उद्गार ` मानस की कुसुमित वाणी `, ` तुम विमल हृदय उच्छ्वास और मैं कान्त कामिनी कविता ` कहकर उसकी भी भावपरक व्याख्या ही की है, परन्तु उनके काव्य पर एक विहंगम दृष्टि डालने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि उनमें कोरी भावुकता नहीं अपितु भावों की अतिशय प्रबलता पर एक सहज नियंत्रण भी है। जहां प्रसाद का काव्य अतिशय भावुकता से भरा है, पंत में कल्पना की नई-नई ऊंची उड़ानें हैं, वहीं निराला में एक नियंत्रण दृष्टिगोचर होता है। उनका काव्य भाववादी नहीं है। प्रसाद के ` आंसू ` में ` रो - रो कर सिसक - सिक ` के द्वारा एक ` करुण कहानी ` कहानी कही गयी है, ` कामायनी ` की ` वन सुहा, कुंज, मरु, निर्झर में, हूं खोज रहा अपना विकास ` द्वारा कवि की ` आत्म निष्ठता ` की अभिव्यक्ति की गयी है, निजी वेदना का स्वर मुखरित किया गया है, परन्तु निराला में ऐसा नहीं। ` उनके रोमान्टिसिज्म में निजी वेदना का स्वर नहीं है। भावना का गाम्भीर्य क्या है ? वैयक्तिक वेदना का प्रकाशन गम्भीर भाव नहीं कहा जा सकता। गम्भीरता तटस्थता से आती है, तभी गहराई में जाकर वस्तु चित्रण किया जा सकता है। यह वस्तुन्मुखी दृष्टि निराला में है। अन्य कतिपय कड़ियों में वेदना की गहराई के नाम पर केवल आत्म - विलाप

---

१ - छायावाद के गौरव चिन्ह : प्रो० रोम : आमुख, पृष्ठ ४।

से बहुत दूर हैं। ----- प्रसाद में व्यक्तिगत आसक्तियाँ प्रचुरमात्रा में भरी हैं जिससे काव्य में एक असंतुलन भी आ गया है। निराला में वैयक्तिक संवेदन है, स्वपरकता नाम की कोई चीज नहीं है।'[१]

इस प्रकार निराला में कोरी भावुकता नहीं है, भावों का स्वच्छन्द अनियंत्रित आतिशय्य नहीं है। निराला ने छायावादी काव्य को इस अतिभावुकता से मुक्त किया। यही उनका वैशिष्ट्य है। इस कार्य में उन्हें भावना की अपेक्षा बुद्धितत्व की प्रमुखता से बड़ी सहायता मिली है। उनके काव्य में बुद्धि तत्व की प्रमुखता है। राग और कल्पना की अपेक्षा यही तत्व काव्य में निस्संगता लाता है। बुद्धितत्व की यह प्रमुखता उनमें दो रूपों में पायी जाती है। एक तो 'वर्णित विषय के भीतर से अभिव्यक्त कवि का तटस्थ, अस्खलित और निर्लिप्त व्यक्तित्व' और दूसरे 'अभिव्यक्ति की प्रणाली में सौष्ठता, छन्दों की कसावट, पद - विन्यास की सुघरता और शब्दशक्ति और संगीत की परख' - दोनों उनके बुद्धि - विशिष्ट कवि व्यक्तित्व की देन हैं। अन्य छायावादी कवियों में यह बुद्धितत्व अत्यन्त विरल है। बुद्धि तत्व की प्रधानता से उनका काव्य कोरी भावुकता के आतिशय्य से बोझिल नहीं हो सका है। इस प्रकार निराला ने छायावादी काव्य को अतिशय भावुक होने से बचाया। यही उनकी विशिष्टता है।

किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि उनके बुद्धि - विशिष्ट काव्य में भाव है ही नहीं। वस्तुतः निराला ही एक ऐसा छायावादी कवि हैं जिसमें भाव, कल्पना और कला का संतुलन दृष्टिगोचर होता है। छायावादी भावोच्छ्वासों के कल्पनातिरेक और कोमल कान्त पदावली में सग्रंथित कला का संयम एवं परिष्कार हम निराला में पाते हैं। यदि पंत में कल्पना - प्राचुर्य है तो निराला में कल्पनात्मकता उनसे

---

१ - महाकवि निराला : भाग १, सं० जानकी वल्लभ शास्त्री, पृष्ठ ४४ व ४६ पर आ० नन्द दुलारे वाजपेयी का लेख।

अधिक है । निराला हैं कला प्रधान और पंत कल्पना - प्रधान । काव्य की जो मौलिक प्रेरणा - कल्पना - है वह पंत में उच्चकोटि की है, पर इस कल्पना को सज्जितकर उसे रूप दे देनी की विशेषता निराला की है । इसीलिए पंत के काव्य में जहां उपमा - उत्प्रेक्षा का आधिक्य हैं, वहां निराला में रूपकों का। निराला के रूपक - विधान और चित्र - निर्माण की क्षमता में कल्पना का सन्निवेश है - `नर्गिस` की कल्पना, `तुलसीदास का प्रकृति वर्णन और `राम की शक्ति पूजा` में उनकी कल्पना शक्ति का परिचय मिलता है ।

इस प्रकार जहां उनमें कल्पना (बुद्धि) तत्व का समावेश है, वहीं परिमल गीतिका और अनामिका में उनकी रागात्मिकावृत्ति को प्रश्रय मिला है । यही बात उनके परवर्ती काव्यों `अर्चना` और `आराधना` आदि में भी पाते हैं । तात्पर्य यह कि निराला कोरे बुद्धि - विलासी नहीं, भावुकता और रागात्मिकावृत्ति से भी युक्त हैं । कुल मिलाकर निराला में भाव, कल्पना और बुद्धि का समन्वय है परन्तु विशिष्टता है बुद्धि की ही । `भावों, कल्पना और बुद्धि की त्रिवेणी का तुमुल तरंगाघात निराला की काव्य साधना का सम स्वर है ।`[1] यही कारण है कि निराला का साहित्य एक ओर बुद्धि को चुनौती देता है तो दूसरी ओर रसोत्सुक हृदय को अपूर्व आनन्द देना भी उसी का काम है ।[2] छायावादी काव्य को बुद्धि, रागतत्व और कलातत्व का संतुलन निराला की अनुपम देन है ।

निराला व्यापक संवेदना के भी कवि हैं । छायावादी काव्य में संवेदना के जितने रूप निराला में मिलते हैं उतने अन्य किसी में नहीं । वे अत्यन्त प्रचण्ड, अत्यन्त सुन्दर, अत्यन्त निर्मम, अत्यन्त कोमल, अत्यन्त निर्भीक एवं साहसी और अत्यन्त आत्मभीरु तथा अत्यन्त विनम्र, उग्र तथा सौम्य - अपने से ही परिचालित एक निसर्ग जगत थे -

---

१ - महाप्राण निराला : गंगा प्रसाद पाण्डेय : पृष्ठ १८७ ।
२ - महा प्राण निराला : गंगा प्रसाद पाण्डेय : पृष्ठ १३७ ।

जिसे अंग्रेजी में फेनोमेना कहते हैं। उन्होंने अपनी अनुभूति से बोध के उच्च से उच्च और निम्न से निम्न स्तर छुए थे - वह आज के युग की एक अनिवार्य परिस्थिति, उसकी महानताओं और क्षुद्रताओं के निःसंग प्रतिनिधि थे।[१] इसीलिए निराला काव्य को विराट् की सतत साधना की भूमि कहा गया है। इस व्यापक संवेदना भूमि को देखकर यह बरबस कहना पड़ता है कि छायावादी काव्य दृष्टि को पूर्ण बनाने में निराला का सबसे बड़ा हाथ रहा है। यदि छायावाद से निराला को निकाल दिया जाय तो यह संवेदना के क्षेत्र में अकिंचन हो जायगा। छायावाद को संवेदनाओं की एक विविध और व्यापक भूमि प्रदान कर निराला ने उसमें अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है।

निराला जी ने छायावाद को शक्ति, पौरुष और विद्रोह की दृष्टि प्रदान की। निराला छायावाद - युग के पौरुष - प्रकाश स्तम्भ हैं। उनका काव्य पुरुष - काव्य है, उसमें पुरुष - पौरुष है, ओज है, उत्साह है और है जीर्ण - शीर्ण को नष्ट कर एक नवनिर्माण करने की क्षमता। वस्तुतः हिन्दी काव्य में ऐसा पौरुष और विद्रोह का स्वर कभी नहीं सुना गया था। निराला शक्ति सौन्दर्य और ज्योतिस्पर्श के कवि हैं। उनके चित्रों में रंगीनी उतनी नहीं जितना प्रकाश है। पंत की सौन्दर्य दृष्टि केवल कोमल स्थलों का स्पर्श करती है, निराला की सौन्दर्य दृष्टि कठोर का भी संवरण करती है। महादेवी में करुणा - विगलित हृदय के उद्गार हैं जो प्रियतम से एकाकार होने की छट पटाहट के द्योतक हैं। प्रसाद जी में शैव दर्शन समन्वित मधुचर्या का चरम परिपाक है। इसके विपरीत निराला में पौरुष - प्राबल्य है। उनके राम पुरुष सिंह हैं जो उसी भाव से शक्ति की मौलिक कल्पना और पूजा करते हैं। इसी प्रकार `जागो फिर एक बार`, `शिवाजी का पत्र`, नाचे उस पर श्यामा` में भी ओज, पौरुष और प्रकाश हैं। उन्हें शक्ति, पौरुष, ओज और प्रकाश का यह संदेश स्वामी विवेकानन्द से मिला था। निराला कहते हैं `यह तो

---

१ - निराला : सं० पद्मसिंह शर्मा `कमलेश`, पृष्ठ ३१ पर जानकी वल्लभ शास्त्री का लेख।

जानते ही हो कि मैंने विवेकानन्द का सारा वर्क हजम कर लिया है। जब इस प्रकार की बात मेरे अन्दर से निकलती है, तो समझो, यह विवेकानन्द बोल रहे हैं।"[१] अतः उनके काव्य में पौरुष का वही उद्दाम प्रवेश, शक्ति का वही अराजेय रूप दृष्टिगत होता है जो स्वामी जी में। वस्तुतः निराला - काव्य पुरुष काव्य है। हिन्दी को यह पौरुष का उद्घोष युगों बाद निराला में मिला।

निराला ही एक मात्र वह छायावादी कवि हैं जिस पर नैराश, कल्पना - विहार, स्वप्निलता और पलायन का आक्षेप नहीं किया जा सकता। निराला काव्य इन सबसे परे हैं। यहां एक अदम्य उत्साह, अपराजेय पौरुष और यथार्थवाद है। निराला स्वप्न लोक के कवि नहीं है। यद्यपि उन पर जैसा कि पीछे कहा जा चुका है, शेली का प्रभाव है परन्तु इन क्षेत्रों में वे शेली के प्रभावों से मुक्त हैं। शेलीपर मेथ्यू आर्नाल्ड ने आरोप किया था कि वह एक ऐसा देवदूत है जो कल्पना के आकाश में अपने प्रकाशमान पंखों को व्यर्थ ही फड़फड़ा रहा है।[२] निराला ऐसे आक्षेपों से मुक्त हैं। नैराश्य, कल्पना विहार, स्वप्निलता और पलायन जैसे आक्षेपों के निवारणार्थ छायावाद निराला का सतत आभारी रहेगा।

छायावाद मुख्यतः विद्रोहों का साहित्य है। जिस प्रकार आंग्ल रोमांटिक युग में वर्ड्सवर्थ प्रभृति कवियों ने अपने पूर्ववर्ती युग (क्लासिकल युग) की समस्त मान्यताओं को उखाड़ फेंका और काव्य के नवीन प्रतिमान और क्षितिजों का महनीय द्वार खोला, उसी प्रकार हिन्दी काव्य में छायावादी युग ने भी। इस युग के कवियों में प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। परन्तु विद्रोह के क्षेत्र में निराला ने सबसे पहले विगुल बजाया और जैसा कि कहा जा चुका है कि उनमें

---

१ - अभिनन्दन ग्रन्थ, ३७ वां संस्मरण, पृष्ठ ११४।

२ - "And in poetry, no less than in life, he is a beautiful and ineffectual angel, beating in the void his luminous wings in vain." M. Arnold; (A History of Eng. Lit. Pt. II: Prof. J.N. Mundra, p. 306.)

विद्रोह का स्वर भी सबसे प्रधान रहा है । यों तो उनका विद्रोही स्वर काव्य के प्रत्येक में दिखाई पड़ता है परन्तु वह सबसे अधिक मुखर है मुक्त छन्दों के क्षेत्र में । निराला के विद्रोह की एक विशेषता यह है कि वह सब कुछ विनष्ट ही नहीं करती वरन् वह साथ - ही - साथ सृजन भी करती है । जहां उन्होंने छायावादी काव्य के क्षेत्रों में नवीनता भी दी है जो छायावादी काव्य के लिए एक बहुत बड़ी देन है ।

छायावादी काव्यदृष्टि मानवतावादी भी रही है । प्रसाद जी ने ~~मानव~~ मानव की शीतल छाया में ण शोध करूंगा निजकृतिका और ` विजयिनी मानवता बन जाय ` का उद्घोष किया, तो पंत जी ने ` मानव तुम सबसे सुन्दरतम ` कहकर अपनी मानवतावादी दृष्टि का परिचय दिया । महाकवि निराला भी इस छायावादी मानवतावाद में एक अभूतपूर्व योगदान करते हैं । उनका मानवतावादी दृष्टिकोण उनके अद्वैतवादी दर्शन की देन है और इसकी व्याख्या की जा चुकी है । रवीन्द्र नाथ टैगोर के ` मानुषेर चेये बड़ किछु नाइ ` की भांति निराला जी भी ` तुम हो महान, तुम हो महान ` द्वारा मानव की श्रेष्ठता का प्रतिपादन करते हैं । उनका यह मानवतावाद किसी आन्दोलन, किसी कार्यक्रम की प्रतिपत्ति नहीं, न किसी सिद्धान्त निरूपण का प्रतिफलन है, अपितु उसकी अन्विति स्वतंत्र है यद्यपि प्रेरणा स्वरूप वह अद्वैतवाद से संबद्ध है ।

निराला का यह मानवतावाद उनके काव्य में ~~जनवाद के रूप~~ में व्यक्त हुआ है । जनवाद से तात्पर्य उनके नवीन यथार्थवादी दृष्टिकोण से है जिसमें जन सामान्य की प्रतिष्ठा है । प्रसाद जी इसी को ` लघुता के प्रति साहित्यिक दृष्टिपात ` कहते हैं । तात्पर्य यह कि वह दृष्टिकोण जिसमें जन सामान्य की इच्छाओं - आकांक्षाओं सुख-दुःखों, सफलताओं - असफलताओं का चित्रण हो वही काव्य जनवादी कहा जायेगा । इस अर्थ में प्रसाद काव्य में जनवाद नहीं मिलता । प्रसाद में जनवाद दार्शनिक रूप जिसे हम सैद्धान्तिक मानवतावाद कहते हैं दर्शनीय है, परन्तु इसका व्यावहारिक स्वरूप जनवाद वहां नहीं है । जनवाद का सच्चा प्रतिपादन तो छायावाद युग में केवल

निराला और पंत ने किया । इस क्षेत्र में निराला पंत से आगे हैं क्योंकि पंत ने आगे चलकर यह पथ त्याग दिया है, परन्तु निराला ने इसे कभी नहीं छोड़ा । निराला के जनवाद में शोषित, उत्पीड़ित, दीन-हीन वर्ग का जो सफल चित्रण किया गया है वह अन्यत्र दुर्लभ है । उनकी `देवी सरस्वती` में ग्रामों के शोषण - उत्पीड़न की अत्यन्त मार्मिक कथा कही गयी है । निराला काव्य का यह जनवादी रूप विधवा, भिक्षुक, किसान की नई बहू की आँखें और दान कविताओं मे मिलता है । उनकी यह जनवादी दृष्टि `बेला`, `कुकुरमुत्ता` और `नये पत्ते` आदि में भी भी व्याप्त है । `कुआ भोकता रहा`, `झींगुर डटकर बोला` और `महंगू मंहगा रहा` में भी यही सामाजिक यथार्थवादी में चित्रित है । अतः निराला जी इस क्षेत्र में सर्वोच्च पद के अधिकारी हैं क्योंकि जहां अन्य छायावादी कवि केवल मानवतावाद की व्याख्या दार्शनिक धरातल पर करते थे वहीं निराला जी दार्शनिकता और सैद्धान्तिकता से एक कदम नीचे व्यावहारिकता पर उतरकर उसे जनवादी रूप में प्रस्तुत करते हैं ।

निराला ने छायावाद को सांस्कृतिक परिवेश दिया । समस्त छायावादी कवियों में इस क्षेत्र में अग्रण्य हैं । हम उनकी प्रसिद्ध रचना `तुलसी दास` को ले सकते हैं । यह रचना यद्यपि अतीत की कथा का आधार लेकर चली है तथापि इसमें भारतीय सांस्कृतिक नवजागरण की अभिव्यक्ति भी है । इस अर्थ में यह सांस्कृतिक काव्य है । प्रारम्भ में इसकी पृष्ठभूमि सांस्कृतिक पराभव और तत्पश्चात् उसके उत्थान की लालसा व्यक्त करती है । इस रचना में युग चेतना - सांस्कृतिक नवजागरण की जो सफल अभिव्यक्ति हुई है वह अन्यत्र दुर्लभ है । काव्य की प्रथम पंक्तियां सांस्कृतिक ह्रास की परिचायक हैं :-

भारत के नभ का प्रभापूर्य
शीतलच्छाय सांस्कृतिक सूर्य
अस्तमित आज रे - तमस्तूर्य दिङ्मण्डल
उर के आसन पर शिर स्त्राण,
शासन करते हैं मुसलमान,
है ऊर्मिल जल, निश्चलत्प्राण पर शतदल । - (अपरा)

भारतीय गगन का सांस्कृतिक सूर्य अस्तमित हो गया है जिससे चतुर्दिक अन्धकार छा गया है। ऐसी परिस्थिति में एक दिन तुलसीदास चित्रकूट जाते हैं। वहां निसर्ग के सौन्दर्य से अभिभूत उनका मन उर्ध्वमुखी होने लगता है। तुलसी जैसे अभीप्सित पात्र को पाकर प्रकृति फूले नहीं समाती और कह उठती है :-

कहता प्रतिजड़ ` जंगम जीवन
भूले थे अब तक बंधु, प्रमन १ `

चित्त को झकझोर देने वाली प्रकृति की बातों को सुनकर तुलसीदास चिंतन में डूब जाते हैं। तुलसी के इस चिन्तन के प्रकाशमान रूप को राहु सदृश उनकी पत्नी का मोह पाश निगड़ित कर लेता है। कवि चित्रकूट से घर लौटता है और वहां पत्नी को न पाकर श्वसुरालय गमन करता है। पत्नी को यह बात अच्छी नहीं लगती और वह उन्हें डांटती है :-

` राम को नहीं, काम के सूत कहलाए। `

इसकी तुलसी पर अप्रत्याशित प्रतिक्रिया होती है - काम सदा के लिए भस्मीभूत हो जाता है -

जागा, जागा संस्कार प्रबल
रे गया काम तत्क्षण वह जल
देखा, बामा, वह न थी, अनल - प्रतिमा वह
इस ओर ज्ञान, उस ओर ज्ञान,
हो गया भस्म वह प्रथम भान
छूटा जग का जो रहा ध्यान, जड़िमा वह। `

तुलसी की पत्नी उनके लिए साक्षात् शारदा बन गयी -

` देखा शारदा नील - बसना। `

पत्नी की उस ज्ञान दात्री मूर्ति को मनोमंदिर में प्रतिष्ठित कर तुलसी गृह से निर्गत हुए और उस ज्ञानदात्री मूर्ति से प्रेरणा पाकर वे देश के अस्तमित सांस्कृतिक सूर्य को 'प्राची - दिगन्त में ' रामचरित मानस ' की रचना द्वारा उदित करने में समर्थ होते हैं। निराला जी ने इसी को ' प्राची दिगन्त उर में पुष्कल रवि-रेखा ' कहा है जो और कुछ नहीं अपितु हमारी सांस्कृतिक चेतना ही है।

' यमुना के प्रति ' में भी सांस्कृतिक अभ्युत्थान की ही बात है। इसी प्रकार ' महाराज शिवाजी का पत्र ' में निराला जी ने भारत की लुप्त प्राय धर्म एवं आत्म त्यागमय ' स्वकेन मुंजीथा ' की याद दिलायी है :-

याद रहे बरबाद जाता है हिन्दू धर्म,
हिन्दू जाति, हिन्दुस्तान।
मरजाद चाहती है आत्मत्याग -
शक्ति चाहती है अपनाव, प्रेम। (अपरा)

हमारी ' अनेकता में एकता ' के सांस्कृतिक सूत्र का भी समावेश इस कविता में है :-

एकता के सूत्र में
यदि तुम गुंथोगे महाराणा राजसिंह से,
निश्चय है,
हिन्दुओं की लुप्त शक्ति
फिर से जग जायगी - (अपरा)

यद्यपि जयशंकर प्रसाद और पंत में भी सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना की गयी है किन्तु इस उत्थान का जो ओजस्वी, उत्साहवर्द्धक स्वर हम निराला में पाते हैं वह उनमें नहीं। पंत में प्राच्य और प्रतीच्य के समन्वय द्वारा एक नवीन सांस्कृतिक उत्थान की बात है, प्रसाद में अतीत के वैभवपूर्ण आलोकमय संस्कृति की स्मृति है तो निराला में उस अतीत के गौरव गान ' के साथ ही एक पुरुष स्वर में आगे बढ़ने का आमंत्रण। इस प्रकार निराला में जो सांस्कृतिक अभ्युत्थान है वह किसी के समन्वय द्वारा नहीं प्राप्त है, किसी से गृहीत नहीं है, उनका अपना स्वतंत्र और सर्वथा मौलिक दृष्टिकोण है जो भारतीयता के अनुरूप है।

निराला ने छायावादी काव्य की अद्वैतवादी दृष्टि को सर्वाधिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनका समस्त काव्य इसी दृष्टि से अनुस्यूत है। उनका काव्य मुक्त काव्य है। उसमें भाव, विचार एवं कला आदि सभी क्षेत्रों में जो मुक्ति का संदेश सुनाई पड़ता है वह इसी अद्वैतवादी दृष्टि का परिचायक है। उन्होंने छन्दों की मुक्ति का जो उद्घोष किया उसमें भी अद्वैतवादी दर्शन का ही हाथ है। इसीलिए निराला को ' दार्शनिक कवि ' कहा गया। यद्यपि छायावादी काव्य में प्रसाद, पंत और महादेवी भी अद्वैतवादी दृष्टि से युक्त हैं परन्तु इनमें और निराला में यही अन्तर है कि जहां अन्य छायावादी कवियों ने अद्वैत दर्शन का उपयोग केवल भाव-जगत में ही किया, वहीं निराला ने काव्य के भाव - पक्ष ही नहीं वरन् उसके शब्द, अलंकार, छन्दादि समस्त कला पक्ष में भी किया। अद्वैतवादी दृष्टि को विस्तृत रूप में काव्य में व्यवहृत करने का काम केवल निराला का ही था।

निराला ने छायावादी काव्य में छायावाद को अनेक अन्य निधियां प्रदान की है जिनमें प्रमुख हैं - महाकाव्यात्मक औदात्य। छायावाद युग में ' कामायनी ' एक मात्र महाकाव्य है। यद्यपि निराला जी ने किसी महाकाव्य का प्रणयन नहीं किया, फिर भी उनकी कतिपय काव्य कृतियों में जिस महाकाव्यात्मक औदात्य (इपिक ग्रेंजर) की सर्जना हुई है, वह छायावादी काव्य में अप्रतिम है। निराला की ये काव्य कृतियां हैं - सरोज - स्मृति, राम की शक्ति पूजा, तुलसीदास।

जिस प्रकार अंग्रेजी रोमांटिक काव्य साहित्य के प्रसिद्ध कवि शेली और कीट्स ने किसी भी शास्त्रीय नियमबद्ध महाकाव्य की रचना नहीं की, परन्तु उनकी ' प्रोमीथियस अनबाउण्ड ' और ' हाइपीरियन ' महाकाव्य की गरिमा से मंडित है, वैसे ही निराला की ये तीनों रचनाएं महाकाव्य न होते हुए भी महाकाव्यात्मक औदात्य से पूर्ण हैं।

'सरोज - स्मृति' की भावभूमि में मुख्य व्याप्ति करुण रस की है, फिर भी वात्सल्य, शृंगार और हास्य का भी सम्यक् समावेश है। इन सबके ऊपर है निराला की निर्लिप्त तटस्थता। यहां वे शृंगार के स्वस्थ चित्रण के एक मात्र कलाकार हैं :-

'धीरे धीरे बढ़ा चरण
बाल्य केलियों का प्रांगण
कर पार, लावण्य भार थर - थर
कांपा कोमलता का सस्वर
ज्यों मालकोश नववीणा पर।'

'मालकोश षाम् पंचम वर्ग का भैरवी ठाट का राग है (कुछ इसे आशावरी का भी मानते हैं) जो रात्रि के तीसरे पहर में गाया जाता है। यह उच्च भावों का गम्भीर प्रकृति का राग है और इसके स्वर मृदु होते हैं। सरोज के तारुण्य आगमन की वीणा पर गाये गये मालकोश से उपमा देकर निराला ने उसकी प्रकृत व्यंजना के साथ उसकी पवित्रता की रक्षा की है। प्रकृति का गाम्भीर्य, और स्वर की मृदुलता यौवन के प्राथमिक लक्षण हैं। यहां संगीत की उपमा से काव्य का शृंगार कर कवि ने भावों के औदात्य की भी रक्षा कर ली है। इसके पश्चात् सरोज की तरुणावस्था का जो चित्र है उसमें नैश-स्वप्न की मंदगति, उषा का जागरण, किसलय दलों का खिलना, दिव्यबंधन में बंधी देह - यष्टि के उल्लेख - सब यौवन के लक्षणों के प्रतीकार्थ हैं।--- यह निराला की काव्य शक्ति और औदात्य का प्रमाण है।'[१]

पुन: इस रचना की अल्पकथावस्तु में पारिवारिक और सामाजिक जीवन की यथार्थवादी झांकी भी है। इस प्रकार इस कृति में आत्माभिव्यंजना, व्यक्तित्व विकास अनेक भावों की वैविध्यपूर्ण व्यापकता, कलाकार की नि:स्संगता और शैली की उदात्तता

१ - निराला काव्य : पुनर्मूल्यांकन : डा० धनंजय वर्मा, पृष्ठ १५४।

प्रभृति उल्लेखनीय विशेषताएं इसे महाकाव्यात्मक औदात्य से आपूरित कर देती हैं।

`राम की शक्तिपूजा` में भी महाकाव्यात्मक गरिमा का प्रस्तुतीकरण है। इस क्षेत्र में कवि का प्रथम उपक्रम भाषा का असाधारण उत्कर्ष और गाम्भीर्य है। पुनः विराट चित्रों और दृश्यों की योजना में भी वह दर्शनीय है। शक्ति की कल्पना, समुद्र वर्णन, युद्ध और रात्रि का वर्णन सभी महाकाव्यीय परम्परा के अनुकूल हैं। हनुमान के प्रसंग में एक अतिमानवीय (सुपर ह्यूमन) प्रभाव की व्यंजना भी है। भावों का गाम्भीर्य भी महाकाव्य की उदात्त गरिमा का परिपोषक है। इनके नाटकीय तत्वों का प्रचुर नियोजन (जिसका विश्लेषण इसी प्रबन्ध के पिछले एक अध्याय में है), पौराणिकता का आधार, साधनात्मक दार्शनिक आधार एवं अन्तर्द्वन्द्वों की सृष्टि - सभी इस महाकाव्यात्मक औदात्य के विकास में योगदान करते हैं। `राम की शक्ति पूजा` वास्तव में प्राचीन महाकाव्यों की शैली पर प्रणीत एक नया काव्य - रूप है जिसमें सांस्कृतिक गौरव का भी आख्यान है। निराला की इस काव्य कृति का रूप ठीक वैसा ही है जैसा चाइल्ड हेरोल्ड (बायरन), `प्रोमाथियस अनबाउन्ड` (शेली) और `हाइपीरियन` (कीट्स) का।

तीसरी कृति है - `तुलसीदास`। इस रचना का विषय महाकाव्यों के अनुरूप दार्शनिक और चिन्तन प्रधान है। इसका आधार सांस्कृतिक उत्थान की समस्या है। आत्म - विस्तार और आत्म - दर्शन की ऊर्ध्व-गामिता - ये दो महाकाव्य के अन्तरंग विषय हैं और इस कृति में ये दोनों ही मिलते हैं। इसके अतिरिक्त `कामायनी` की भांति यहां भी मानव अन्तर्मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, सांस्कृतिक चित्रण और प्राकृतिक छटाओं का अंकन भी वस्तु वर्णन के अन्तर्गत ही समाहित है। पुनः इसमें महाकाव्यीय विराट कल्पनाओं का संयोजना भी है। महाकाव्यीय उपमाओं के क्षेत्र में

कवि यहां कालिदास से टक्कर लेता है। प्रकृति में नारी का रूपक और नारी में प्रकृति का रूपक निर्वाह इन्हीं उदात्त कल्पना प्रसूत उपमाओं का काम है। 'तुलसीदास' की शैली महाकाव्यों की असाधारण और महत् (ग्रेन्ड) शैली है। महाकाव्यीय विस्तृत एवं व्यापक जीवन पट और विविध भावों की प्रचुरता आदि कतिपय गुण इस रचना में नहीं है, फिर भी अपनी सीमित परिधि में यह रचना महाकाव्यात्मक औदात्य की प्रतिष्ठा है। यह छायावादी काव्य को निराला की अनुपम देन है। इस क्षेत्र में वे हाइपीरियन के कवि कीट्स, प्रोमीथियस अनबाउन्ड के कवि शेली और चाइल्ड हेराल्ड के कवि बायरन से किसी भी अर्थ में पीछे नहीं है। वस्तुतः निराला ने हिन्दी छायावादी काव्य को अपनी इन रचनाओं द्वारा आंग्ल साहित्य की टक्कर में ला खड़ा कर एक स्तुत्य कीर्तिमान स्थापित किया है। यही निराला का अन्य छायावादी कवियों से वैशिष्ट्य है।

छायावादी शिल्प के क्षेत्र में उनके सबसे बड़ा वैशिष्ट्य है - उनकी छन्दोमुक्ति दृष्टि। छन्दोमुक्ति का अर्थ अराजकता नहीं होता। उसकी भी अपनी व्यवस्था है। मुक्त छन्द का तात्पर्य छन्द शास्त्रीय रूढ़ि और परम्परागत छान्दसिक नियमावली से स्वतंत्रता ही है। निराला ने जो मुक्त छन्द की साधना की है उसका मूल निर्देश केवल यही है कि हिन्दी कविता को छन्दों के बन्धन से मुक्त किया जाय -

> 'प्रिये, छोड़ छन्दों की बंधनमय छोटी राह
> गज गामिनि वह पथ तेरा संकीर्ण कंटकाकीर्ण
> कैसे होगी उससे पार।' (अनामिका)

निराला जी का कथन है कि परम्परागत छन्द विधान एक रूढ़ि बन गया था। उसके द्वारा नवीनता की साधना नहीं हो सकती थी। जब उन्होंने यह कहा कि मुक्त छन्दों में भी छन्दों की भूमि या नियम रहते ही हैं तो प्रश्न उठा कि प्राचीन नियम सिद्ध परम्परागत छन्दों के विरोध की आवश्यकता ही क्यों? उसका तात्पर्य

क्या है ? इसका उत्तर आ० नन्ददुलारे बाजपेयी जी देते हैं :- पुरानी कोठियों और महलों से जो दूर वातावरण में बने थे, बाहर निकल आना भी कभी क्रान्ति कहला सकती है और नये आवास बनाकर रहना भी नये वातावरण का निर्माण करना कहा जा सकता है । ठीक यही बात निराला जी के छन्द और उनकी छन्दात्मक रचनाओं के संबंध में कही जा सकती है ।"[१]

निराला जी ने मुक्त छन्दों की वकालत करते हुए कहा है कि वह साहित्य के लिए कभी भी अनर्थकारी नहीं सिद्ध होता । उससे साहित्य में एक स्वाधीन चेतना जागृत होती है और वह साहित्य का अपार कल्याण करता है ।[२] निराला जी के अनुसार, मुक्त छन्दों में ओज और पौरुष रहता है । वह काव्य की स्त्री-सुकुमारता के विरुद्ध कवित्त का पौरुष गर्व है । उनके अनुसार मुक्त भावों की अभिव्यक्ति मुक्त छन्दों की मांग करती है । उनका यह कथन सर्वथा उचित है । काव्य में नवीन वर्ण्य विषय के प्रवेश के साथ ही उसकी सफल अभिव्यक्ति यदि मुक्त छन्दों में हो तो क्या अशाक्ति और असंगत है ? निराला की क्रान्तिकारिणी प्रतिभा ने काव्य में जिन नये - नये भाव बोधों की भूमि का संस्पर्श किया, उनकी सफल अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने मुक्त छन्द की जो सर्जना की वह छायावादी काव्य में अमर रहेगी । वस्तुत: मुक्त छन्द के विषय में उनकी स्थापनाओं का अपना स्वतंत्र महत्व है । मुक्त छन्दों का यह आविष्कार हिन्दी काव्य जगत में एक ` माइल स्टोन ` है ।

इन सबके अतिरिक्त छायावादी काव्य में गीतों का जैसा प्रयोग और रूप निराला ने स्थापित और निर्देशित किया, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है । शास्त्रीय राग - रागिनियों में बंधे गीतों के साथ ही उनके काव्य में एक स्वच्छन्द संगीत, जिसकी धारा आधुनिक काल में चल पड़ी है, मिलता है । इस स्वच्छन्द संगीत में भारतीयलयों,

---

१ - आधुनिक साहित्य : भूमिका : आ० नन्द दुलारे बाजपेयी : पृष्ठ २६ ।
२ - परिमल : भूमिका : पृष्ठ १२ ।

पाश्चात्य लयों और ग्राम्य गीतों का समन्वय मिलता है । निराला के अधिकांश गीत इस स्वच्छन्द शैली में लिखे मिलते हैं । उनके गीतों का एक वर्ग लोक गीतों या जन गीतों का है । इनमें फारसी - उर्दू की कव्वालियां, उत्तर - प्रदेश का विरहा, कजली इत्यादि अनेक प्रकार हैं जो शास्त्रीय संगीत से बाहर हैं । ये सभी निराला में हैं ।

निराला जी हिन्दी के सबसे बड़े गीतकार हैं । संख्या की दृष्टि से सबसे अधिक गीत उन्होंने लिखे । भाव और छन्दों, लयों और तालों की विविधता भी उनमें सबसे अधिक है । `परिमल` के थोड़े से गीत प्रकाशित होते ही हिन्दी के कण्ठहार हो गये । बंगला के रवीन्द्रनाथ, अतुल प्रसाद सेन और नजरुल इस्लाम के गीत जिस श्रेणी के हैं, उसी श्रेणी की चीजें निराला ने हिन्दी में दी हैं । `अनामिका` और `गीतिका` के गीत भी अपना सानी नहीं रखते । निराला में विद्यापति के गीतों का मार्दव, भाव - प्रवणता और माधुर्य है । इसीलिए उन्हें कुछ लोग अभिनव विद्यापति भी कहते हैं । उनके गीतों में ओज और पौरुष का प्रवाह है, दर्शन की बोझिलता है और कल्पना की उड़ाने भी । इस प्रकार गीतकार के रूप में निराला आधुनिक कविता के क्षेत्र में सबसे बड़ी सिद्ध होते हैं । निराला ही छायावाद का वह कवि है जिसके गीतों में भावों की विविधता, छन्दों की अनेकरूपता, प्राचीनता और नवीनता की समन्वय पूर्ण नवीन मौलिकता आदि एक साथ मिलती है । छायावादी कवियों में जितनी विस्तृत और व्यापक गीत दृष्टि कविवर निराला की रही है उतनी और किसी अन्य छायावादी कवि की नहीं । महादेवी का स्वर एक है । उनमें एक गम्भीरता आद्यन्त है । यद्यपि महादेवी महादेवी के गीतों में भी लोक गीतों का सौन्दर्य मिलता है परन्तु उनमें एक गम्भीरता और क्लिष्टता है । निराला के गीत जन गीतों के नाम से प्रसिद्ध हैं जिनमें जनमानस का सहज - सरल रूप अबाधित गति से प्रवाहित हो उठा है ।

निराला के गीतों में प्राचीन और नवीन गीतों की समग्रता (टोटलिटी) का एक साथ संदर्शन होता है। छायावादी गीतों में इतनी विविधता और नवीनता अन्य किसी कवि में नहीं मिलती निराला के गीत आगत और अनागत दोनों के केन्द्र विन्दु हैं। आधुनिक युग में नई कविता के कतिपय गीतकार निराला के ही मार्ग का अनुवर्तन कर रहे हैं। वह इस बात को सिद्ध करता है कि निराला ही नई कविता के नव गीतों के आदि कवि हैं। निराला ने नवीन की सतत उद्भावना की है जो उनके गीतों से भी प्रमाणित होता है। वस्तुतः निराला नवयुग के नव गीतों के अमर प्रणेता, गायक और उद्भावक हैं। हिन्दी काव्य में ऐसा गीतकार युगों के बाद आविर्भूत हुआ।

इस प्रकार निराला ने छायावाद की महती सेवा की है। वर्ण्य - विषय के प्रकृत प्रवाह, भाव और बुद्धि के संतुलन, दर्शन और काव्य के मधुर मिलन, मुक्त भावों के वाहक मुक्त छन्दों के साथ अभिनव गीत - प्रणयन, काव्य के महाकाव्यात्मक औदात्य और सामाजिक यथार्थ के रूप में जनवादी मानवतावाद के सन्निवेश के लिए छायावादी काव्य उनका चिर ऋणी रहेगा।

उपसंहार

समग्रत: हम कह सकते हैं कि छायावादी काव्य दृष्टि को भी निराला जी ने एक नवीन काव्य दृष्टि दी है । उनकी काव्य दृष्टि में जहां क्रान्ति , विद्रोह, स्वच्छंदता और नित नूतनता का आग्रह है, वहीं निर्माण की दिशाओं, स्थापना के नये आयामों का निर्देश भी । उनके साहित्यिक निबंध जो प्रबंध पद्म, प्रबन्ध-प्रतिमा, चाबुक, चयन आदि में प्रकीर्ण हैं तथा परिमल और गीतिका की भूमिका में हैं, छायावादी काव्य दृष्टि के निर्माण में अत्यन्त सहायक सिद्ध होते हैं । निराला ने काव्य मुक्ति का शंखनाद किया, मानव अनुभूतियों कोप्रकृत अभिव्यंजना का रूप प्रदान किया और काव्य के मूल में कल्पना के आस्थान के साथ प्रतिमा और साधना या कवि - कर्म के महत्व का प्रतिपादन कर छायावादी काव्यदृष्टि को एक नवीन मोड़ प्रदान किया ।

पाश्चात्य आंग्ल साहित्य में रोमांटिक काव्य दृष्टि का महत्व परम्परागत और शास्त्रीय रूढ़िबद्ध मान्यताओं से प्रस्थान-भेद का है । वह काव्य की स्वतंत्रता और उसकी स्वच्छंद ; अन्वितियों का आस्थान लेकर चली थी । उसने पाश्चात्य काव्य शास्त्र के दो सुमेरु प्लेटो और अरस्तू का अतिलंघन किया और पूर्ववर्ती नवशास्त्रवाद (Neo - Classicism) का विरोध किया । तद्युगीन कवि वर्ड्सवर्थ ने काव्यशास्त्र में अरस्तू की स्थापनाओं से भिन्नता प्रकट की थी और कालरिज ने काव्य की स्वतंत्र प्रक्रिया और कल्पना के महत्व की प्रतिस्थापना की । शेली ने रोमांटिक काव्य के इस रूप को विद्रोह की दृष्टि दी और कीट्स ने सौन्दर्य की दृष्टि दी । हिन्दी छायावादी कवियों में निराला ही वह एकमात्र कवि हैं जिन्होंने आंग्ल रोमांटिक कवियों की काव्य दृष्टियों को समाहित करते हुए भी उनसे सर्वथा असंपृक्तता को व्यक्त की है । न उनमें वर्ड्सवर्थ की भांति परम्परा का एकदम परित्याग है और न वे काव्य

केवल तीव्रतम अनुभूतियों का स्वत: प्रवाह ही मानते हैं । वे तो काव्य में परम्परा और आधुनिकता दोनों का संश्लिष्ट नवीन रूप स्वीकार करते हैं और काव्य में अनुभूति के साथ बुद्धि का भी समन्वय मानते हैं । इस प्रकार निराला वस्तुत: ' निराले ' हैं । वे किसी भी साहित्य, साहित्यकार, या किसी भी युग का अनुकरण नहीं करते हैं । निराला ही हिन्दी काव्य - जगत का वह कवि, वह सिंह और सपूत है जो लीक छोड़कर चला और नवीन मार्ग का आलोक दिया जिस पर आज भी ' नई कविता ' और प्रयोगवादी कविता चल रही है ।[१]

इस प्रकार निराला की काव्यदृष्टि कतिपय शाश्वत मूल्यों के प्रति सहमति प्रकट करती हुई नये आयाम लेती है । एक तरफ वे एक शास्त्रवादी (क्लासिक्स) कवि की भांति प्राचीन काव्य-सिद्धान्तों को स्वीकार करते हैं, तो दूसरी तरफ अपनी नव्य प्रवृत्ति के कारण मौलिकता का सृजन । ' सरोजस्मृति ' नाम्नी कविता में इसी की ओर संकेत है :-

' फिर सोचा - मेरे पूर्वजगण
गुजरे जिस राह वही शोभन
होगा मुझको, यह लोकरीति
कर दें पूरी, गो नहीं भीति
कुछ मुझे तोड़ते गत विचार
पर पूर्ण रूप प्राचीन भार
ढोते मैं हूं अभ्यास । ' - (अपरा)

ये पंक्तियां निराला के काव्य में केवल प्राचीन सामाजिक रूढ़ियों और संस्कारों को पालन करने और तोड़ने की ओर ही इंगित नहीं करती, वरन् ये अप्रत्यक्ष रूप से उनकी

---

१ - अवलोकनीय - निराला : सं० पद्मसिंह शर्मा ' कमलेश ', पृष्ठ ११३ पर डा० धनंजय वर्मा का ' प्रगति और प्रयोग ' लेख ।

काव्य मान्यताओं एवं काव्य दृष्टि की ओर संकेत करती हैं । वे `प्राचीन भार` पूर्ण रूप से नहीं ढोना चाहते । कालिदास की `पुराणमित्येव न साधु सर्वम्` की उक्ति के समान वे उन्हीं प्राचीन दृष्टियों को स्वीकार करते हैं जो नवीन के निर्माण में सहायक हों । यही कारण है कि जहां कवि के ब्रह्म होने, कविता के द्वारा सत्य का मिहिर द्वार देखने और उर्ध्व ध्यान द्वारा उस पार जाने में भारतीय काव्य शास्त्र का अनुकार करते हैं, वहीं वे प्रकृति के मुक्त सौन्दर्य में कविता का वास, वेदना और संवेदना में उसका हास, कल्पना के कानन का राजत्व और मानस-तरंग, मानस की कुसुमित वाणी, भावाकुल शब्दोच्छल में अंग्रेजी रोमांटिक काव्य धारा से भी विलक्षण समानता रखते हैं । उनका भावाकुल शब्दोच्छल, वर्ड्सवर्थ के, कल्पना के कानन का राजत्व ब्लेक के और दर्शन दृष्टि कालरिज के निकट हैं । तात्पर्य यह कि न वे पूर्णतः भारतीय काव्यशास्त्र का अनुगमन करते हैं, न पाश्चात्य ही । इस प्रकार वे न तो पूर्णतः छायावादी काव्यदृष्टि का अनुकार करते हैं और न पूर्णतः आंग्ल रोमांटिक कवियों की दृष्टि से समता रखते हैं । वे हैं सर्वथा मौलिक और उनकी यह मौलिकता भारतीय व पाश्चात्य साहित्य दृष्टियों से समता रखती हुई भी उनसे भिन्न भी है ।

अतः निराला न पूर्णतः शास्त्रीय दृष्टि रखते हैं न छायावादी । `निराला की कला में रोमांटिक के अतिरिक्त एक क्लासिकल स्पर्श भी मिलता है, क्लासिकल प्रयोग मैं मुख्यतः काव्य की उत्कृष्टता तथा बौद्धिक गाम्भीर्य की दृष्टि से कर रहा हूं । यद्यपि छन्द बंध तोड़ कर कला आदि की दृष्टि से उन्होंने प्राचीन काव्य शास्त्रीय परम्परा का विद्रोह किया है, पर भारतीय दर्शन, चिंतन तथा सांस्कृतिक परम्परा की दृष्टि से वह प्रसाद जी की तरह स्वच्छन्दतावादी होते हुए भी अपने अन्तरतम में क्लासिकल अभिरुचि के कलाकार हैं । उनका जो सर्वोत्कृष्ट है वह क्लासिकल रुचि से प्रेरित है --।[१]

१ - निराला : सं० पद्मसिंह शर्मा `कमलेश` - पृष्ठ २८ पर आ० जानकी वल्लभ शास्त्री के लेख से ।

इसीलिए आचार्य नलिन विलोचन शर्मा कहते हैं : - `निराला` अपने `छायावादी काव्य में भी अंशत: ही छायावादी है।`[१] वे छायावादी काव्य दृष्टि की सीमित परिधि के भीतर होते हुए भी उससे बाहर हैं। उन्होंने छायावादी काव्य की अन्तर्मुखीनता का अतिलंघन कर बाह्योन्मुखी वस्तु परक काव्य दृष्टि का परिचय दिया है। उनकी कविता में जो वैविध्य और व्यापकता और नवीनता है उसे देखकर हम यही कह सकते हैं कि निराला युग - युग के कवि थे और उनकी काव्यदृष्टि आगत और अनागत युग - विस्तृत थी, अत: उसमें वैविध्य, अन्तर्विरोध, त्रिकाल सत्य, अनन्तता, इनफिनिटी और विराण्ड समाहित हैं। इसे हम एक शब्द में व्यक्त करना चाहें तो वह होगा - मुक्त अथवा प्रकृत काव्य दृष्टि जो छायावादी काव्य दृष्टि को निराला की अनुपम देन है।

यही कारण है कि निराला की काव्य दृष्टि कतिपय शाश्वत मूल्यों के प्रति सहमति प्रकट करती हुई नये आयाम लेती है। छायावादी काव्यदृष्टि और भावभूमि के सन्दर्भ में दुर्गीन काव्य शास्त्र को निराला का कदाचित उतना ही महत्वपूर्ण देय है जितना `लिरिकल बैलड` की भूमिका का। रोमांटिक काव्य धारा के संदर्भ में रोमांटिक काव्य शास्त्र को निराला - साहित्य की स्वतंत्रता और उसके `सहित भाव` की विशेषता का आख्यान करते हुए कला के विकास उसकी चिर नवीनता और मानव - मन के सौन्दर्य की अभिव्यक्ति में विश्वास करते हैं। कवि को ब्रह्मा और काव्य को लोकोत्तरानन्द कहने में उनकी सहमति भारतीय शास्त्रीय दृष्टि का समर्थन करती है। काव्य - प्रक्रिया में दैवी प्रेरणा, संस्कार, प्रतिभा एवं साधना का समन्वय निराला ने किया है। प्रकृति और कल्पना के योग तथा क ा काव्यात्मक सहानुभूति अथवा संवेदना के द्वार वे काव्य को दृष्टि मानते हैं। काव्य के बाह्य परिवेश में वे निरंतर मुक्ति के पक्षपाती हैं। छन्द और भाषा की

१ - महाकवि निराला : भाग १, सं० डा० जानकी बल्लभ शास्त्री, पृष्ठ ५६।

मुक्ति के साथ वे काव्य के अन्तर्गत भाव और विचारों की नवीनता और मौलिकता का आग्रह करते हैं। यह उनकी स्वच्छन्द दृष्टि का प्रमाण है। काव्य और संगीत का भी उचित संबंध निराला ने सिद्धान्त एवं व्यवहार में किया है और छायावादी प्रगति काव्य को संगीतात्मकता उनकी देन महत्वपूर्ण मानी जाएगी। शब्द और भाषा को विचार और भाव अनुगत मानने में उनकी वैयक्तिक दृष्टि, सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति उसकी रुझान का परिचायक है। काव्य में 'आत्म' की स्थापना द्वारा उसे व्यक्तित्व बोध और प्रकाशन का माध्यम निराला ने माना है। अपने दार्शनिक व्यक्तित्व के कारण निराला ने दर्शन और काव्य का पारस्परिक संबंध माना है। वे काव्य में भी एक विचारक और दार्शनिक के रूप में प्रकट होते हैं, फिर भी काव्य की मूलभूत स्थापनाओं का तिरस्कार नहीं करते। उनका महत्व यही है कि दर्शन और विचार भी उनमें काव्य होकर आता है। यह कल्पना के साथ काव्य में बुद्धि तत्व की स्थापना भी है क्योंकि भाव भी बौद्धिक - प्रक्रिया के अंग होते हैं। उनका काव्य एक साथ ही उच्चकाव्य और दर्शन की संगति का अभिधान है। इसकी एक परिणति यह भी है कि जहां कवि भावों और अनुभूतियों को काव्य का आधार मानता है, वहीं वह विचारक और दार्शनिक भी हो सकता है और काव्य के साथ न्याय भी कर सकता है। प्रत्येक श्रेष्ठ कवि, कवि होने के साथ विचारक और दार्शनिक भी होता है। सच तो यह है कि निराला की काव्य दृष्टि, परम्परागत रूढ़ मान्यताओं के विरोध के साथ ही नये मूल्यों की स्थापना भी करती है। विरोध की साभिप्रायिक अर्थपूर्ण स्थिति भी यही है। छायावादी काव्य दृष्टि में निराला की मान्यताओं का एकान्तिक और ऐतिहासिक महत्व है।[१]

---

१ - निराला काव्य : पुनर्मूल्यांकन : डा० धनंजय वर्मा : पृष्ठ १०० व १०१।

—:00:—

सहायक ग्रन्थसूची

सहायक ग्रन्थावली

(क) कवि और उनके साहित्य :

प्रसाद-साहित्य -

१ - प्रेम पथिक
२ - करुणालय
३ - कानन-कुसुम
४ - महाराणा
५ - लहर
६ - आंसू
७ - कामायनी
८ - स्कन्दगुप्त
९ - अजातशत्रु
१० - काव्य कला तथा अन्य निबंध

निराला-साहित्य -

१ - अनामिका
२ - परिमल
३ - गीतिका
४ - तुलसीदास
५ - अणिमा
६ - कुकुरमुत्ता
७ - अपरा
८ - नये पत्ते
९ - बेला
१० - अर्चना
११ - गीत गुंज
१२ - प्रबन्ध पद्म
१३ - प्रबन्ध प्रतिमा
१४ - पंत और पल्लव
१५ - चाबुक
१६ - चयन

पंत - साहित्य -

१ - वीणा
२ - पल्लव
३ - गुंजन
४ - युगान्त
५ - युग वाणी
६ - उत्तरा
७ - आधुनिक कवि
८ - रश्मिबंध
९ - गद्य पथ
१० - चिदम्बरा

महादेवी - साहित्य -

१ - यामा
२ - नीरजा
३ - सांध्यगीत
४ - दीपशिखा
५ - आधुनिक कवि
६ - दार्जिलिंग
७ - स्मृति की रेखाएं

(ख) काव्य व आलोचना-ग्रन्थ :

१ - आधुनिक साहित्य : आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी
२ - आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां : डा० नामवर सिंह
३ - आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियां : डा० नगेन्द्र
४ - आधुनिक हिन्दी कविता में अलंकार विधान : डा० जगदीश नारायण त्रिपाठी
५ - आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य : डा० रामेश्वर लाल खंडेलवाल
६ - आधुनिक काव्यधारा : डा० केशरीनारायण शुक्ल
७ - आधुनिक हिन्दी काव्य शिल्प : मन मोहन अवस्थी
८ - आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द-योजना : डा० पुत्तूलाल शुक्ल
९ - आचार्य द्विवेदी और उनके संगी साथी : पं० किशोरीदास वाजपेयी
१० - आधुनिक हिन्दी कविता में ध्वनि : डा० कृष्णलाल शर्मा

११ - आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास : डा० श्रीकृष्ण लाल
१२ - आधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प : कैलाश वाजपेयी
१३ - आधुनिक हिन्दी साहित्य की व्यक्तिवादी भूमिका : डा० बलभद्र तिवारी
१४ - आधुनिक हिन्दी कवियों के काव्य सिद्धान्त : डा० सुरेश चन्द्र गुप्त
१५ - आधुनिक हिन्दी काव्य पर आंग्ल प्रभाव : डा० रवीन्द्र सहाय
१६ - आधुनिक हिन्दी साहित्य : डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
१७ - कल्पना और छायावाद : डा० केदार नाथ सिंह
१८ - काव्य दर्पण : राम दहिन मिश्र
१९ - कामायनी का टीका : विश्वम्भर 'मानव'
२० - काव्य का देवता : निराला , विश्वम्भर 'मानव'
२१ - कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन : द्वारका प्रसाद
२२ - कामायनी सौन्दर्य : डा० फतह सिंह
२३ - काव्य के रूप : डा० गुलाब राय
२४ - काव्य रूपों के मूल स्त्रोत और उनका विकास : डा० शकुन्तला दूबे
२५ - काव्य चिन्तन : डा० नगेन्द्र
२६ - काव्य विमर्श : राम दहिन मिश्र
२७ - काव्य में अभिव्यंजनावाद : लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु'
२८ - कांग्रेस का इतिहास : पट्टाभि सीतारमैया
२९ - क्रान्तिकारी कवि निराला : डा० बच्चन सिंह
३० - कवि प्रसाद, आंसू तथा अन्य कृतियां : विनयमोहन शर्मा
३१ - कवि और काव्य : शान्ति प्रिय द्विवेदी
३२ - गीतिकाव्य : डा० राम खेलावन पाण्डेय
३३ - चिन्तामणि - भाग १ व २ : आ० रामचन्द्र शुक्ल
३४ - चक्रवाल : दिनकर
३५ - छन्दः प्रभाकर : आ० जगन्नाथ प्रसाद 'भानु'
३६ - छायावाद : डा० उमाभानु सिंह
३७ - छायावाद : डा० नामवर सिंह
३८ - छायावाद का सौन्दर्यशास्त्रीय अध्ययन : डा० विमल कुमार

३९ – छायावाद की काव्य साधना : प्रो० क्षेम
४० – छायावाद के गौरव चिन्ह : प्रो० क्षेम
४१ – छायावाद की दार्शनिक पृष्ठभूमि : डा० सुषमापाल
४२ – छायावाद : पुनर्मूल्यांकन : पंत
४३ – छायावाद : रामेश्वर दयाल सक्सेना
४४ – छायावाद युग : डा० शम्भूनाथ सिंह
४५ – छायावाद और महादेवी : डा० नन्दकुमार राय
४६ – छायावादी काव्य और निराला : डा० शान्ति श्रीवास्तव
४७ – छायावादी काव्य : डा० कृष्णा चन्द्र वर्मा
४८ – छायावादी कवियों का सौन्दर्य विधान : डा० सूर्य प्रसाद दीक्षित
४९ – छायावाद युगीन स्मृतियां : रामनाथ सुमन ` कल्पित `
५० – छायावाद का काव्य शिल्प : प्रतिभा कृष्णबल
५१ – छायावाद का पतन : डा० देवराज
५२ – छायावाद और प्रगतिवाद : सं० डा० देवेन्द्रनाथ शर्मा
५३ – छायावादी काव्य में लोक मंगल विधान : डा० अम्बादत्त पाण्डेय
५४ – छायावाद : डा० रवीन्द्र भ्रमर
५५ – छायावाद : डा० रामरतन भटनागर
५६ – जयशंकर प्रसाद : आ० नन्द दुलारे वाजपेयी
५७ – द्विवेदी युग का हिन्दी काव्य : डा० रामसकल शर्मा
५८ – देखा – परखा : इलाचन्द्र जोशी
५९ – नया हिन्दी काव्य : डा० शिवकुमार मिश्र
६० – नया हिन्दी काव्य और विवेचना : डा० शम्भूनाथ चतुर्वेदी
६१ – निराला काव्य : पुनर्मूल्यांकन : डा० धनंजय वर्मा
६२ – निराला एक अध्ययन : डा० रामरतन भटनागर
६३ – निराला : आ० जानकी वल्लभ शास्त्री

६४ - निराला : डा० राम विलास शर्मा
६५ - निराला काव्य का अभिव्यंजना शिल्प : डा० जनार्दन द्विवेदी
६६ - निराला की काव्य साधना : वीणा शर्मा
~~६७ - निराला की काव्य साधना : वीणा शर्मा~~
६८ - नया साहित्य नये प्रश्न : आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी
६९ - निराला : सं० पद्मसिंह शर्मा ` कमलेश `
७० - निराला और नवजागरण : डा० रामरतन भटनागर
७१ - निराला का परवर्ती काव्य : रमेश चन्द्र मेहरा
७२ - निराला ; आत्महन्ता आस्था : डा० दूधनाथ सिंह
७३ - निराला ; व्यक्ति और कवि : राम अवध शास्त्री
७४ - निराला काव्य का अध्ययन : भगीरथ मिश्र
७५ - प्रसाद और पंत का तुलनात्मक विवेचन : प्रो० राम रजपाल द्विवेदी
७६ - प्रामाणिक हिन्दी (शब्द) कोष : रामचन्द्र वर्मा
७७ - प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी की सर्वश्रेष्ठ रचनाएं : वाचस्पति पाठक
७८ - प्रगति और परम्परा : राम विलास शर्मा
७९ - प्रिय-प्रवास : ` हरिऔध `
८० - पंत और उनका युग : यशदेव शल्य
८१ - भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका : डा० नगेन्द्र
८२ - भारतीय साहित्यशास्त्र - भाग १ व २ : बलदेव उपाध्याय
८३ - भारत - भारती - मैथिलीशरण गुप्त
८४ - महादेवी का विवेचनात्मक गद्य : गंगा प्रसाद पाण्डेय
८५ - महाकवि निराला : व्यक्तित्व और कृतित्व : प्रेम नारायण टण्डन
८६ - महाकवि निराला : काव्य, कला और कृतियां : विश्वम्भर नाथ उपाध्याय
८७ - महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग : डा० उदय भानु सिंह
८८ - महाप्राण निराला : गंगा प्रसाद पाण्डेय
८९ - महाकवि कीट्स का काव्य लोक : यतेन्द्र कुमार
९० - महाकवि वर्ड्सवर्थ का काव्य लोक : यतेन्द्र कुमार

९१ - महादेवी वर्मा का काव्य, कला और जीवन दर्शन : शची रानी गुर्टू (सं०पादक)
९२ - युग और साहित्य : शान्ति प्रिय द्विवेदी
९३ - युगाराध्य निराला : पं० गंगाधर मिश्र
९४ - रसज्ञ रंजन : महावीर प्रसाद द्विवेदी
९५ - रोमांटिक साहित्यशास्त्र : देवराज उपाध्याय
९६ - रवीन्द्र कविता - कानन : ` निराला `
९७ - विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर : इलाचन्द जोशी
९८ - विचार और वितर्क : डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी
९९ - स्वच्छन्दतावाद और छायावाद का तुलनात्मक विवेचन: डा० शिवकरण सिंह
१०० - सुमित्रानन्दन पंत : डा० नगेन्द्र
१०१ - साहित्य - सिद्धान्त : डा० राम अवध द्विवेदी
१०२ - संस्कृति के चार अध्याय : दिनकर
१०३ - साहित्यालोचन : डा० श्याम सुन्दर दास
१०४ - हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
१०५ - हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : भाग १ व २ : डा० राम कुमार वर्मा
१०६ - हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी : नन्द दुलारे वाजपेयी
१०७ - हिन्दी साहित्य कोष : ज्ञान मंडल लि० (वाराणसी)
१०८ - हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास : डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी
१०९ - हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास : डा० भगीरथ मिश्र
११० - हिन्दी महाकाव्यों का उद्भव और विकास : डा० शम्भूनाथ सिंह
१११ - हिन्दी की छायावादी कविता का कला विधान : डा० बलवीर सिंह ` रत्न `
११२ - हिन्दी रीति साहित्य : डा० भगीरथ मिश्र
११३ - हिन्दी कविता में युगान्तर : डा० सुधीन्द्र
११४ - हिन्दी की काव्य शैलियों का विकास : डा० हरदेव बाहरी
११५ - हिन्दी काव्य में छायावाद : ए दीनानाथ शरण

(ग) संस्कृत - ग्रंथ :

१ - उत्तररामचरितम् : भवभूति
२ - काव्य प्रकाश : मम्मट
३ - काव्यालंकार : भामह
४ - ध्वन्यालोक : आनन्द वर्धन
५ - मेघदूतम् : कालिदास
६ - साहित्य दर्पण : विश्वनाथ

ENGLISH BOOKS

1. Adonais - P.B. Shelley
2. Biographia Literaria : S.T. Coleridge
3. Collected Essays in English Literary Criticism; Herbent Read.
4. Epic - Abercrombie
5. English Epic and Heroic Poetry - W.M. Dixon
6. Epipsychidian : P.B. Shelley
7. Golden Treasury, Palgrave
8. Lyrical Ballad, W. Wordsworth
9. Muslim Rule in India : Dr. Ishwari Prasad
10. Romantic Imagination - C.M. Bowra
11. Romantic Movement in English Poetry: A. Symons
12. Shelley and His poetry: E.W. Edmunds
13. The English Epic and its background : E.M.W. Tillyard.

पत्र - पत्रिकाएं :

सरस्वती

हंस

आलोचना पत्रिका

माधुरी

साप्ताहिक हिन्दुस्तान

धर्मयुग

नागरी प्रचारिणी पत्रिका

आनन्द-कादम्बिनी

सम्मेलन पत्रिका

चारुचन्द्रिका

हरिश्चन्द्र मैगजीन

समालोचक ।

--:00:--